2 मलिक मुहम्मद जायसी

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1492 ई0।
- **जन्म-स्थान**—जायसनगर (उ॰प्र॰)।
- **पिता का नाम**—शेख ममरेज।
- **प्रमुख काव्य-ग्रन्थ**—पद्मावत अखरावट, आखिरी कलाम।
- **भाषा**—अवधी।
- **शैली**—प्रबन्ध।
- **शिक्षा**—साधु-सन्तों की संगति में वेदान्त, ज्योतिष, दर्शन, रसायन तथा हठयोग का पर्याप्त ज्ञान।
- **उपलब्धि**—हिन्दी सूफी काव्य परंपरा के प्रवर्तक।
- **मृत्यु**—सन् 1542 ई0।
- **साहित्य में स्थान**—जायसी सूफी काव्य परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इन्होंने अपने काव्य में प्रबन्ध शैली का प्रयोग किया है।

"भक्तिकालीन धारा की प्रेममार्गी शाखा के अग्रगण्य तथा प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने मुसलमान होकर भी हिन्दुओं की कहानियाँ हिन्दुओं की ही बोली में पूरी सहृदयता से कहकर उनके जीवन में मर्मस्पर्शिनी अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामञ्जस्य दिखा दिया। कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता का आभास दिया था। प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी थी, वह जायसी के द्वारा पूर्ण हुई।"

जायसी के जन्म के सम्बन्ध में अनेक मत हैं। इनकी रचनाओं से जो मत उभरकर सामने आता है, उसके अनुसार जायसी का जन्म सन् 1492 ई0 के लगभग रायबरेली जिले के 'जायस' नामक स्थान में हुआ था। ये स्वयं कहते हैं—**'जायस नगर मोर अस्थानू।'** जायस के निवासी होने के कारण ही ये जायसी कहलाये। 'मलिक' जायसी को वंश-परम्परा से प्राप्त उपाधि थी और इनका नाम केवल मुहम्मद था। इस प्रकार इनका प्रचलित नाम मलिक मुहम्मद जायसी बना। बाल्यकाल में ही जायसी के माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण शिक्षा का कोई उचित प्रबन्ध न हो सका। सात वर्ष की आयु में ही चेचक से इनका एक कान और एक आँख नष्ट हो गयी थी। ये काले और कुरूप तो थे ही, एक बार बादशाह शेरशाह इन्हें देखकर हँसने लगे। तब जायसी ने कहा—**'मोहिका हँसेसि, कि कोहरहिं?'** इस बार बादशाह बहुत लज्जित हुए। जायसी एक गृहस्थ के रूप में भी रहे। इनका विवाह भी हुआ था तथा पुत्र भी थे। परन्तु पुत्रों की असामयिक मृत्यु से इनके हृदय में वैराग्य का जन्म हुआ। इनके चार घनिष्ठ मित्र थे—यूसुफ मलिक, सालार कादिम, सलोने मियाँ और बड़े शेख। बाद में जायसी अमेठी में रहने लगे थे और वहीं सन् 1542 ई0 में इनकी मृत्यु हुई थी। कहा जाता है कि जायसी के आशीर्वाद से अमेठी नरेश के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ। तबसे

उनका अमेठी के राजवंश में बड़ा सम्मान था। प्रचलित है कि जीवन के अन्तिम दिनों में ये अमेठी से कुछ दूर मँगरा नाम के वन में साधना किया करते थे। वहीं किसी के द्वारा शेर की आवाज के धोखे में इन्हें गोली मार देने से इनका देहान्त हो गया था।

'पद्मावत', 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'चित्ररेखा' आदि जायसी की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनमें 'पद्मावत' सर्वोत्कृष्ट है और वही जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इस ग्रन्थ का प्रारम्भ 1520 ई0 में हुआ था और समाप्ति 1540 ई0 में। जायसी ने **'पद्मावत'** में चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा का अत्यन्त मार्मिक वर्णन किया है। एक ओर इतिहास और कल्पना के सुन्दर संयोग से यह एक उत्कृष्ट प्रेम-गाथा है और दूसरी ओर इसमें आध्यात्मिक प्रेम की भी अत्यन्त भावमयी अभिव्यंजना है। **अखरावट** में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर दर्शन एवं सिद्धान्त सम्बन्धी बातें चौपाइयों में कही गयी हैं। इसमें ईश्वर, जीव, सृष्टि आदि से सम्बन्धित वर्णन हैं। **आखिरी कलाम** में मृत्यु के बाद प्राणी की दशा का वर्णन है। **चित्ररेखा** में चन्द्रपुर की राजकुमारी चित्ररेखा तथा कन्नौज के राजकुमार प्रीतम कुँवर के प्रेम की गाथा वर्णित है।

जायसी का विरह-वर्णन अत्यन्त विशद एवं मर्मस्पर्शी है। 'षड्ऋतु वर्णन' और 'बारहमासा' जायसी के संयोग एवं विरह वर्णन के अत्यन्त मार्मिक स्थल हैं। जायसी रहस्यवादी कवि हैं और इनके रहस्यवाद की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्रेममूलक भावना है। इन्होंने ईश्वर और जीव के पारस्परिक प्रेम की व्यंजना दाम्पत्य-भाव के रूप में की है। रत्नसेन जीव है तथा पद्मावती परमात्मा। यह सूफी पद्धति है। 'पद्मावत' में पुरुष (रत्नसेन) प्रियतमा (पद्मावती) की खोज में निकलता है। जायसी ने इस प्रेम की अनुभूति की व्यंजना रूपक के आवरण में की है। इन्होंने साधनात्मक रहस्यवाद का चित्रण भी किया है, जिसकी प्रधानता कबीर में दिखायी देती है। जायसी ने सम्पूर्ण प्रकृति में पद्मावती के सौन्दर्य को देखा है तथा प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को उस परम सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए आतुर और प्रयत्नशील दिखाया है। यह प्रकृति का रहस्यवाद कहलाता है। जायसी की भाँति कबीर में हमें यह भावात्मक प्रकृतिमूलक रहस्यवाद देखने को नहीं मिलता।

जायसी का भाव-पक्ष बहुत समृद्ध है, परन्तु इनका कला-पक्ष और भी अधिक श्रेष्ठ है। कला-पक्ष के अन्तर्गत भाषा, अलङ्कार, छन्द आदि का महत्त्व है। इनकी भाषा अवधी है। उसमें बोलचाल की लोकभाषा का उत्कृष्ट भावाभिव्यंजक रूप देखा जा सकता है। लोकोक्तियों के प्रयोग से उसमें प्राणप्रतिष्ठा हुई है। अलङ्कारों का प्रयोग अत्यन्त स्वाभाविक है। केवल चमत्कारपूर्ण कथन की प्रवृत्ति जायसी में नहीं है। मसनवी शैली में लिखे 'पद्मावत' में प्रबन्ध काव्योचित सौष्ठव विद्यमान है। दोहा और चौपाई जायसी के प्रधान छन्द हैं। 'पद्मावत' की भाषा की प्रशंसा करते हुए **डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल** ने कहा था—*''जायसी की अवधी भाषाशास्त्रियों के लिए स्वर्ग है, जहाँ उनकी रुचि की अपरिमित सामग्री सुरक्षित है। मैथिली के लिए जो स्थान विद्यापति का है। मराठी के लिए जो महत्त्व ज्ञानेश्वरी का है, वही महत्त्व अवधी के लिए जायसी की भाषा का है।''*

●●●

नागमती-वियोग-वर्णन

[प्रस्तुत वर्णन 'पद्मावत' से अवतरित है। सिंहल के राजा गंधर्वसेन की पुत्री पद्मावती का एक पालित शुक किसी कारणवश महल से निकला और बहेलिए द्वारा पकड़ा जाकर चित्तौड़ के एक ब्राह्मण द्वारा क्रय किया गया। ब्राह्मण ने एक लाख लेकर उसे चित्तौड़ नरेश रत्नसेन के हाथ बेंच दिया। एक दिन उसकी रानी नागमती ने उस वाचाल तोते से अपने रूप के विषय में पूछा, जिस पर उसने पद्मावती की प्रशंसा करते हुए उसकी अपेक्षा रानी का रूप बहुत घट कर बतला दिया। रानी ने तोते को मार डालने का आदेश एक धाय को दिया। राजा के भय से धाय ने तोते को छिपा दिया। राजा लौटने पर तोते को न पाकर अत्यन्त क्रोधित हुए। अन्त में वह हीरामन नाम का तोता उपस्थित किया गया। राजा ने उससे सम्पूर्ण घटना सुनी। पद्मावती का रूपवर्णन सुनते ही राजा सोलह हजार कुँवर जोगियों के साथ पद्मावती को प्राप्त करने के लिए जोगी का वेश बनाकर निकल पड़े। राजा की अनुपस्थिति में रानी नागमती के वियोग-दुःख में संतप्त होने का वर्णन जायसी जी ने निम्न प्रकार से किया है।]

नागमती चितउर पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा।।
नागर काहु नारि बस परा। तेइ मोर पिउ मोसौं हरा।।
सुआ काल होइ लेइगा पीऊ। पिउ नहिं जात, जात बरु जीऊ।।
भयउ नरायन बाबन करा। राज करत राजा बलि छरा।।
करन पास लीन्हेउ कै छंदू। बिप्र रूप धरि झिलमिल इंदू।।
मानत भोग गोपिचन्द भोगी। लेइ अपसवा जलंधर जोगी।।
लै कान्हहि भा अकरूर अलोपी। कठिन बिछोह, जियहिं किमि गोपी?

सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह?
झुरि झुरि पींजर हौं भई, बिरह काल मोहि दीन्ह।।1।।

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा निति बोलै 'पिउ पीऊ'।।
अधिक काम दाधै सो रामा। हरि लेइ सुवा गएउ पिउ नामा।।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज, भींजि गइ चोली।।
सूखा हिया, हार भा भारी। हरे हरे प्रान तजहिं सब नारी।।
खन एक आव पेट महँ! साँसा। खनहिं जाइ जिउ, होइ निरासा।।
पवन डोलावहिं, सीचहिं चोला। पहर एक समुझहिं मुख बोला।।
प्रान पयान होत को राखा? को सुनाव पीतम कै भाखा?

आहि जो मारै बिरह कै, आगि उठै तेहि लागि।
हंस जो रहा सरीर महँ, पाँख जरा, गा भागि॥2।

पाट महादेइ ! हिये न हारू। समुझि जीउ, चित चेतु सँभारू।।
भौंर कँवल सँग होइ मेरावा। सँवरि नेह मालति पहँ आवा।।
पपिहै स्वाती सौं जस प्रीती। टेकु पियास, बाँधु मन थीती।।
धरतिहि जैस गगन सौं नेहा। पलटि आव बरषा ऋतु मेहा।।
पुनि बसंत ऋतु आव नवेली। सो रस, सो मधुकर, सो बेली।।
जिन अस जीव करसि तू बारी। यह तरिवर पुनि उठिहि सँवारी।।
दिन दस बिनु जल सूखि बिधंसा। पुनि सोइ सरवर, सोई हंसा।।

मिलहिं जो बिछुरे साजन, अंकम भेंटि गहंत।
तपनि मृगसिरा जे सहैं, ते अद्रा पलुहंत॥3॥

चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।।
धूम साम, धौरे घन धाए। सेत धजा बग पाँति देखाए।।
खड़क बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरसहिं घन घोरा।।
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी। कंत! उबारु मदन हौं घेरी।।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ।।
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाह, मँदिर को छावा?
अद्रा लाग लागि भुइँ लेई। मोहिं बिनु पिउ को आदर देई?

जिन्ह घर कंता ते सुखी, जिन्ह गारौ औ गर्ब।
कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्ब॥4॥

सावन बरस मेह अति पानी। भरनि परी, हौं बिरह झुरानी।।
लाग पुनरबसु पीउ न देखा। भइ बाउरि, कहँ कंत सरेखा।।
रकत कै आँसु परहिं भुइँ टूटी। रेंगि चलीं जस बीरबहूटी।।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियरि भूमि कुसुंभी चोला।।
हिय हिंडोल अस डोलै मोरा। बिरह भुलाइ देइ झकझोरा।।
बाट असूझ अथाह गँभीरी। जिउ बाउर भा, फिरै भँभीरी।।
जग जल बूड़ जहाँ लगि ताकी। मोरि नाव खेवक बिनु थाकी।।

परबत समुद अगम बिच, बीहड़ घन बनढाँख।
किमि कै भेंटों कन्त तुम्ह? ना मोहि पाँव न पाँख॥5॥

भा भादों दूभर अति भारी। कैसे भरौं रैनि अँधियारी।।
मन्दिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरि फिरि डसा।।
रहौं अकेलि गहे एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।।
चमक बीजु घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।।

बरसै मघा झकोरि झकोरी। मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी।।
धनि सूखै भरे भादौं माहाँ। अबहुँ न आएन्हि सीचेन्हि नाहाँ।।
पुरवा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भई तस झूरी।।

थल जल भरे अपूर सब, धरति गगन मिलि एक।
धनि जोबन अवगाह महँ, दे बूड़त, पिउ! टेक॥6॥

लाग कुवार, नीर जग घटा। अबहुँ आउ, कंत! तन लटा।।
तोहि देखे पिउ! पलुहै कया। उतरा चीतु बहुरि करु मया।।
चित्रा मित्र मीन घर आवा। पपिहा पीउ पुकारत पावा।।
उआ अगस्त, हस्ति घन गाजा। तुरय पलानि चढ़े रन राजा।।
स्वाति बूँद चातक मुख परे। समुद सीप मोती सब भरे।।
सरवर सँवरि हंस चलि आए। सारस कुरलहिं, खँजन देखाए।।
भा परगास, बाँस बन फूले। कंत न फिरे बिदेसहिं भूले।।

बिरह हस्ति तन सालै, घाय करै चित चूर।
बेगि आइ, पिउ! बाजहु, गाजहु होइ सदूर॥7॥

कातिक सरद चंद उजियारी। जग सीतल, हौं बिरहै जारी।।
चौदह करा चाँद परगासा। जनहुँ जरैं सब धरति अकासा।।
तन मन सेज जरै अगिदाहू। सब कहँ चंद, भएउ मोहि राहू।।
चहुँ खंड लागै अँधियारा। जौं घर नाहीं कंत पियारा।।
अबहूँ, निठुर! आउ एहि बारा। परब देवारी होइ संसारा।।
सखि झूमक गावैं अँग मोरी। हौं झुरावँ, बिछुरी मोरि जोरी।।
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा।। मो कहँ बिरह, सवति दुख दूजा।।

सखि मानैं तिउहार सब, गाइ देवारी खेलि।
हौं का गावौं कंत बिनु, रही छार सिर मेलि॥8॥

अगहन दिवस घटा, निसि बाढ़ी। दूभर रैनि, जाइ किमि गाढ़ी?
अब यहि बिरह दिवस भा राती। जरौं बिरह जस दीपक बाती।।
काँपै हिया जनावै सीऊ। तो पै जाइ होइ सँग पीऊ।।
घर घर चीर रचे सब काहू। मोर रूप रँग लेइगा नाहू।।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै, फिरै रँग सोई।।
सियरि अगिनि बिरहिन हिय जारा। सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा।।
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जनम करै भसमंतू।।

पिउ सौ कहेउ सँदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग!
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहि क धुवाँ हम्ह लाग॥9॥

पूस जाड़ थर थर तन काँपा। सुरुजु जाइ लंका दिसि चाँपा।।
बिरह बाढ़, दारुन भा सीऊ। कँपि कँपि मरौं, लेइ हरि जीऊ।।
कंत कहाँ लागौं ओहि हियरे। पथ अपार, सूझ नहिं नियरे।।
सौंर सपेती आवै जूड़ी। जानहु सेज हिवंचल बूड़ी।।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं दिन राति बिरह कोकिला।।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसे जियै बिछोही पखी।।
बिरह सचान भएउ तन जाड़ा। जियत खाइ औ मुए न छाँड़ा।।

रकत ढुरा माँसू गरा, हाड़ भएउ सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई, पीऊ समेटहि पंख।।10।।

लागेउ माघ, परै अब पाला। बिरहा काल भएउ जड़काला।।
पहल पहल तन रूई झाँपै। हहरि हहरि अधिकौ हिय काँपै।।
आइ सूर होइ तपु, रे नाहा। तोहि बिनु जाड़ न छूटै माहा।।
एहि माह उपजै रसमूलू। तू सो भौंर, मोर जोबन फूलू।।
नैन चुवहिं जस महवट नीरू। तोहि बिनु अंग लाग सर चीरू।।
टप टप बूँद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला।।
केहि क सिंगार को पहिरु पटोरा। गीउ न हार, रही होइ डोरा।।

तुम बिनु काँपै धनि हिया, तन तिनउर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै, चहै उड़ावा झोल।।11।।

फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहिं, झरहिं बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहिं तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जो पै पीउ जरत अस पावा। जरत मरत मोहि रोष न आवा।।
राति दिवस सब यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उडाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरैं जहँ पाव।।12।।

चैत बसंता होइ धमारी। मोहि लेखे संसार उजारी।।
पंचम बिरह पंच सर मारै। रकत रोइ सगरौं बन ढारैं।।
बूड़ि उठे सब तरिवर पाता। भीजि मजीठ, टेसु बन राता।।
बौरे आम फरै अब लागे। अबहूँ आउ घर, कंत सभागे।।
सहस भाव फूलीं बनसपती। मधुकर घूमहिं सँवरि मालती।।

मो कहँ फूल भए सब काँटे। दिस्टि परत जस लागहिं चाँटे।।
फरि जोबन भए नारँग साखा। सुआ बिरह अब जाइ न राखा।।

घिरिनि परेवा होइ पिउ! आउ बेगि परु टूटि।
नारि पराए हाथ है, तोहि बिनु पाव न छूटि॥13॥

भा बैसाख तपनि अति लागी। चोआ चीर चँदन भा आगी।।
सूरुज जरत हिवंचल ताका। बिरह बजागि सौंह रथ हाँका।।
जरत बजागिनि करु, पिउ छाहाँ। आइ बुझाउ अंगारन्ह माहाँ।।
तोहि दरसन होइ सीतल नारी। आइ आगि तें करु फलवारी।।
लागिउँ जरै, जरै जस भारू। फिर फिर भूँजेसि, तजेउँ न बारू।।
सरवर हिया घटत निति जाई। टूक टूक होइ कै बिहराई।।
बिहरत हिया करहु, पिउ! टेका। दीठि दवँगरा मेरवहु एका।।

कँवल जो बिगसा मानसर, बिनु जल गयउ सुखाइ।
कबहुँ बेलि फिरि पलुहै, जौ पिउ सींचैं आइ॥14॥

जेठ जरै जग, चलै लुवारा। उठहिं बवंडर परहिं अँगारा।।
बिरह गाजि हनुवँत होई जागा। लंका-दाह करै तनु लागा।।
चारिहु पवन झकौरै आगी। लंका दाहि पलंका लागी।।
दहि भइ साम नदी कालिंदी। बिरह क आगि कठिन अति मंदी।।
उठै आगि और आवै आँधी। नैन न सूझ, मरौ दुख बाँधी।।
अधजर भइउँ, माँसु तनु सूखा। लागेउ बिरह काल होइ भूखा।।
माँसु खाइ सब हाड़न्ह लागै। अबहुँ आउ, आवत सुनि भागै।।

गिरि, समुद्र, ससि, मेघ, रवि, सहि न सकहिं वह आगि।
मुहमद सती सराहिये, जरै जो अस पिउ लागि॥15॥

तपै लागि अब जेठ असाढ़ी। मोहि पिउ बिनु छाजनि भइ गाढ़ी।।
तन तिनउर भा, झूरौं खरी। भइ बरखा, दुख आगरि जरी।।
बँध नाहिं औ कंध न कोई। बात न आव कहौं का रोई?
साँठि नाठि जग बात को पूछा? बिनु जिउ फिरै मूँज तनु छूँछा।।
भई दुहेली टेक बिहूनी। थाँभ नाहिं उठि सकै न थूनी।।
बरसै मेघ चुवहिं नैनाहा। छपर छपर होइ रहि बिनु नाहा।।
कोरौं कहाँ ठाट नव साजा? तुम बिनु कंत न छाजनि छाजा।।

अबहूँ मया दिस्टि करि, नाह निठुर! घर आउ।
मँदिर उजार होत है, नव कै आइ बसाउ॥ 16॥

('पद्मावत' से)

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर लिखिए—

(क)

नागमती चितउर पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा।।
नागर काहु नारि बस परा। तेइ मोर पिउ मोसौं हरा।।
सुआ काल होइ लेइगा पीऊ। पिउ नहिं जात, जात बरु जीऊ।।
भयउ नरायन बावन करा। राज करत राजा बलि छरा।।
करन पास लीन्हेउ कै छंदू। बिप्र रूप धरि झिलमिल इंदू।।
मानत भोग गोपिचन्द भोगी। लेइ अपसवा जलंधर जोगी।।
लै कान्हहि भा अकरूर अलोपी। कठिन बिछोह, जियहिं किमि गोपी?
सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह?
झुरि झुरि पींजर हौं भई, बिरह काल मोहि दीन्ह।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) चौपाई में प्रयुक्त तोते का नाम क्या है?
(iv) विप्र रूप धरि झिलमिल इंदू' के माध्यम से किस पौराणिक आख्यान का वर्णन है?
(v) रानी नागमती किसका रास्ता देख रही है?

(ख)

चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।।
धूम साम, धौरे घन धाए। सेत धजा बग पाँति देखाए।।
खड़क बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरसहिं घन घोरा।।
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी। कंत! उबारु मदन हौं घेरी।।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ।।
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाह, मँदिर को छावा?
अद्रा लाग लागि भुइँ लेई। मोहिं बिनु पिउ को आदर देई।।
जिन्ह घर कंता ते सुखी, जिन्ह गारौ औ गर्ब।
कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्ब।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) विरह ने युद्ध के लिए किस प्रकार सेना सजा ली है?
(iv) प्रस्तुत पद्य पंक्तियों में किन-किन नक्षत्रों का प्रयोग हुआ है?
(v) नागमती ने अपना सब सुख क्यों भुला दिया है?

(ग)

भा भादों दूभर अति भारी। कैसे भरौं रैनि अँधियारी।।
मन्दिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरि फिरि डसा।।
रहौं अकेलि गहे एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।।
चमक बीजु घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।।
बरसै मघा झकोरि झकोरी। मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी।।
धनि सूखै भरे भादौं माहाँ। अबहुँ न आएन्हि सीचेन्हि नाहाँ।।
पुरवा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भई तस झूरी।।
थल जल भरे अपूर सब, धरति गगन मिलि एक।
धनि जोबन अवगाह महँ, दे बूड़त पिउ! टेक।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) धरती और आकाश मिलकर एक से क्यों दिखाई दे रहे हैं?
(iv) भादों की रात बिताना नागमती के लिए कष्टकर क्यों है ?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में मदार और जवास का उल्लेख किस परिप्रेक्ष्य में हुआ है?

(घ)

कातिक सरद चंद उजियारी। जग सीतल, हौं बिरहै जारी।।
चौदह करा चाँद परगासा। जनहुँ जरैं सब धरति अकासा।।
तन मन सेज जरै अगिदाहू। सब कहँ चंद, भएउ मोहि राहू।।
चहुँ खंड लागै अँधियारा। जौं घर नाहीं कंत पियारा।।
अबहूँ, निठुर! आउ एहि बारा। परब देवारी होइ संसारा।।
सखि झूमक गावैं अँग मोरी। हौं झुरावँ, बिछुरी मोरि जोरी।।
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा। मो कहँ बिरह, सवति दुख दूजा।।
सखि मानैं तिउहार सब, गाइ देवारी खेलि।
हौं का गावौं कंत बिनु, रही छार सिर मेलि।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) चन्द्रमा कितनी कलाओं से प्रकाशित होता है?
(iv) नागमती को कौन-कौन-सा दुःख है?
(v) नागमती की सखियाँ क्या-क्या कर रही हैं?

(ङ)

भा बैसाख तपनि अति लागी। चोआ चीर चँदन भा आगी।।
सूरुज जरत हिवंचल ताका। बिरह बजागि सौंह रथ हाँका।।
जरत बजागिनि करु, पिउ छाहाँ। आइ बुझाउ अंगारन्ह माहाँ।।
तोहि दरसन होइ सीतल नारी। आइ आगि तें करु फलवारी।।
लागिउँ जरै, जरै जस भारू। फिर फिर भूँजेसि, तजेउँ न बारू।।
सरवर हिया घटत निति जाई। टूक टूक होइ कै बिहराई।।

बिहरत हिया करहु, पिउ! टेका। दीठि दवँगरा मेरवहु एका।।
कँवल जो बिगसा मानसर, बिनु जल गयउ सुखाइ।
कबहुँ बेलि फिरि पलुहै, जौ पिउ सींचैं आइ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) बैसाख महीने का चोआ और चन्दन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
(iv) पद्यांश के अनुसार बेल हरी-भरी कब होगी?
(v) प्रस्तुत पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
(क) जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्ब।
(ख) नागमती चितउर पथ हेरा, पिउ जो गये पुनि कीन्ह न फेरा।
(ग) कबहुँ बेलि फिरि पलुहै, जो पिउ सींचै आइ।
(घ) कन्त पियारा बाहिरै, हम सुख मूला सर्व।
(ङ) तपनि मृगसिरा जे सहैं, ते अद्रा पलुहंत।
(च) बिरह क आगि कठिन अति मंदी।
2. मलिक मुहम्मद जायसी की काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
अथवा जायसी के काव्य-सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
3. जायसी का जीवन-परिचय लिखिए।
4. जायसी के काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्तियों का निरूपण कीजिए।
5. "जायसी का विरह-वर्णन अत्यन्त विशद एवं मर्मस्पर्शी है।" उदाहरण देकर समझाइए।
6. मलिक मोहम्मद जायसी के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जायसी की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
2. "प्रकृति के बदलते हुए स्वरूप के साथ नागमती की विरह-व्यंजना का स्वरूप भी बदलता रहा है।" इस कथन की समीचीन व्याख्या कीजिए।
3. नागमती के विरह-वर्णन की मर्मस्पर्शिता का क्या रहस्य है? स्पष्ट कीजिए।
4. "जायसी ने नागमती की विरह व्यंजना को महारानी की नहीं, सामान्य नारी की विरह व्यंजना के रूप में प्रस्तुत किया है।" इस कथन की उपयुक्तता प्रमाणित कीजिए।
5. नागमती के विरह वर्णन को केन्द्र में रखते हुए उसके चरित्र पर प्रकाश डालिए।
6. किस मास अथवा ऋतु का बिम्ब आपको सबसे अधिक मर्मस्पर्शी लगता है और क्यों?
7. जायसी ने अपनी कृतियों में किस भाषा का प्रयोग किया है?

8. नागमती के विरह-वर्णन की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

अथवा 'नागमती-वियोग-वर्णन' की विशेषताओं का सोदाहरण निरूपण कीजिए।

9. जायसी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

➥ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) दादुर मोर कोकिला पीऊ। गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ।।

   (ख) स्वाति बूँद चातक मुख परे। समुद सीप मोती सब भरे।।

2. रूपक अलंकार का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण लिखिए।

●●●